National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(59): 212-214
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

Nitin Mundra
phd jyotirvigyan ,
Maharishi panini Sanskrit-evam vedic university,
Dewas road , Ujjain- MP

Correspondence:
Nitin Mundra
phd jyotirvigyan ,
Maharishi panini Sanskrit-evam vedic university,
Dewas road , Ujjain- MP

जन्म कुंडली में सप्तम भाव के आधार पर विवाह में बड़ा विचार एवं निदान

Nitin Mundra

प्रस्तावना- लग्न कुंडली में सप्तम भाव से विवाह को जाना जा सकता है। विवाह के कारक ग्रह शुक्र गुरु एवं चंद्र होते हैं। जन्म कुंडली में सप्तम भाव में अगर विवाह कारक ग्रह शुक्र गुरु एवं चंद्र स्थित हो तो जातक का विवाह सही उम्र में हो जाता है। विवाह बाधक ग्रह मंगल यदि कुंडली में लग्न द्वितीय चतुर्थ पंचम सप्तम अष्टम एवं द्वादश भाव में हो मंगल ग्रह यदि अपनी उच्च राशि मकर या स्वर्गही राशि मेष वृश्चिक में युवावस्था के होकर यदि स्थित होते हैं तो जातक को विवाह में देरी एवं रूकावटों का सामना करना पड़ता है।

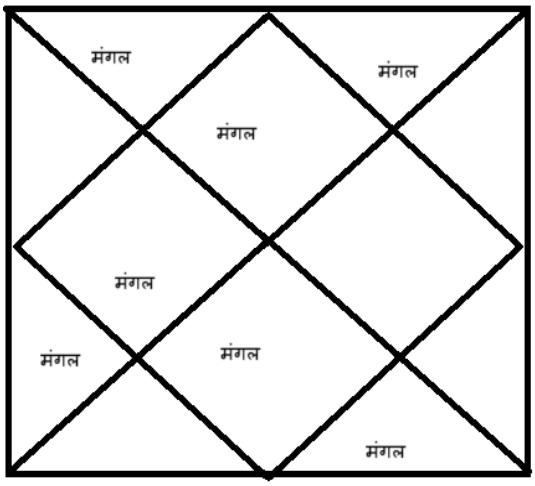

लग्न में मंगल जब बैठते हैं तो सप्तम दृष्टि से सप्तम भाव को देखते हैं। अष्टम दृष्टि से अष्टम भाव को देखते हैं। सप्तम भाव विवाह का होता है और अष्टम भाव आयु ,मृत्यु का होता है इसलिए सप्तम अष्टम भाव को देखना अति आवश्यक है। द्वित्तीय भाव में बैठकर यह सप्तम दृष्टि से अष्टम भाव को देखा है तो जातक मांगलिक योग से पीड़ित होता है। चतुर्थ भाव में मंगल बैठकर अपनी चतुर्थ दृष्टि से सप्तम भाव को देखा है, पंचम भाव में मंगल बैठकर अपनी चतुर्थ से अष्टम भाव को देखा है सप्तम भाव में अष्टम भाव में मंगल स्थित हो तो मांगलिक योग होता है। द्वादश भाव में मंगल बैठकर अपनी अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखा है इसी प्रकार यदि मंगल सपत्मेश में इस ग्रह के साथ किसी भी प्रकार से संबंध बनाता है तो जातक के विवाह में विलंब होता है।

शनि अगर जन्म कुंडली में लग्न पंचम सप्तम भाव में शनि ग्रह बैठते हैं तो सप्तम भाव से संबंध बनाते हैं जिसके कारण विवाह में देरी संभव है। शनि जितना बलवान होगा उतना ज्यादा प्रभावी रहेगा सप्तमेश से शनि किसी भी प्रकार से संबंध बनाता है तो जातक को विवाह में देरी होती है। शनि के समान अगर राहु ग्रह जन्म कुंडली में लग्न द्वितीय तृतीय सप्तम अष्टम एकादश एवं द्वादश भाव राहु बैठते हैं तो सप्तम एवं अष्टम भाव से संबंध बनाते हैं जिसके कारण विवाह होने में रुकावट आती है। सप्तमेश अगर राहु से संबंध बनाता है तो जातक को विवाह में देरी होती है।

केतु ग्रह का भी यही प्रभाव होता है अगर केतु लग्न द्वितीय तृतीय सप्तम अष्टम एकादशी एवं द्वादश भाव में बैठते हैं तो सप्तम एवं अष्टम भाव से संबंध बनाते हैं जिसके कारण विवाह में बहुत सी अड़चने आने लगते हैं। सप्तमेश अगर केतु से संबंध बनाता है तो भी जातक विवाह को लेकर चिंतित रहता है।

सूर्य अगर सप्तम भाव में बैठ कर बलवान होकर बैठते हैं तो जातक को विवाह में विलंब करते हैं यह सप्तमेश का संबंध सूर्य से होता है तो विवाह में समस्या आतीहै।

जन्म कुंडली में पापी ग्रहों का प्रभाव सप्तम अष्टम भाव से हो तो जातक को विवाह में रूकावटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातक को हमेशा जन्म कुंडली का सही आकलन करवा कर ही विवाह करना चाहिए अन्यथा विवाह टूटने की योग बन जाते हैं। जातक को विवाह के बाद नाना प्रकार से संघर्ष करना होता है जो जातक को चिंता ग्रस्त कर देती है जिससे जातक शारीरिक एवं मानसिक तौर पर क्षतिग्रस्त हो जाता है।

विवाह में बाधा के योग- जन्म कुंडली में जब शुक्र नीच राशि में 6, 8, 12 भाव में स्थित हो और पापी ग्रहों की दृष्टि पड़ रही हो तो जातक को विवाह में विलंब होता है।

जन्म कुंडली में जब चंद्र ग्रह नीच राशि में 6, 8, 12 भाव में स्थित हो और पाप ग्रहों के प्रभाव में हो तो जातक को विवाह करने में बहुत से संघर्ष करना पड़ता है।

जन्म कुंडली में जब गुरु नीच राशि में 6 ,8, 12 भाव में स्थित हो और पाप ग्रहों के प्रभाव में हो तो जातक को विवाह में देरी होती है।

सप्तमेश यदि नीच राशि में स्थित हो और 6,8,12 में स्थित हो तथा पापी ग्रहों के प्रभाव में हो तो जातक को विवाह में काफी देरी के योग बनते हैं।

जन्म कुंडली में अगर शुक्र गुरु चंद्र एवं सप्तमेश अस्त हो वक्रि हो तो जातक के विवाह में देरी संभव है।

जन्म कुंडली में अगर शुक्र गुरु चंद्र एवं सप्तमेश बाल अवस्था वृद्धा अवस्था या मृत अवस्था के होते हैं तो जातक के विवाह में देरी होती है।

जन्म कुंडली में अगर मंगल योग हो और मंगल की महादशा चल रही हो तो उस समय जातक को विवाह में देरी होती है।
महादशा हो तो उसे समय जातक को विवाह होने में बाधा होती है।
जन्म कुंडली में अगर शनि सप्तम भाव से संबंध रखता हो और शनि की महादशा हो तो उस समय में जातक को विवाह में देरी होती है।
जन्म कुंडली में अगर सप्तमेश 6, 8,12 भाग में नीचे राशिगत हो और उस पर पापी ग्रहों का प्रभाव हो तो सप्तमेश की महादशा में जातक को विवाह होने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

गोचर से अगर पापी ग्रह शनि मंगल राहु सूर्य सप्तम भाव पर स्थित हो तो जातक के विवाह में देरी संभव है।

उदाहरण कुंडली
पुरुष जन्म तारीख-26-11-1983
जन्म समय-6-55
जन्म स्थान-देवास

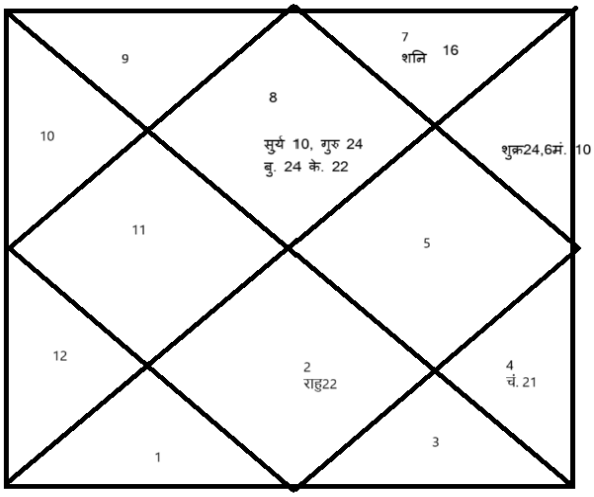

1.सप्तमेश शुक्र का नीच राशि में एकादश भाव में स्थित होना विवाह में रुकावट है।
2.सप्तमेश शुक्र का संबंध मंगल ग्रह का होना विवाह में रुकावट।
3.सप्तमेश वृष राशि से राहु विवाह में रुकावट।
4.द्वादश भाव में उच्च राशि युवावस्था के शनि की दशम दृष्टि चंद्रग्रह पर पढ़ने से जातक को विवाह में रूकावटों का सामना करना पड़ता है।
5.सप्तमेश शुक्र एवं गुरु दोनों बाल अवस्था के होने के कारण जातक को विवाह में बाधा होती है।

उपाय-

1.जातक को शनि मंगल राहु शुक्र की शांति एवं उपाय करना लाभकारी रहेगा।
2.सवा 5 कैरेट के ऊपर का पुखराज रत्न पंच धातु में जड़वा कर धारण करना लाभकारी रहेगा।
3.चंद्रमा का यंत्र चांदी में बनवाकर गले में धारण करना शुभ फलदाई रहेगा।
4.चार मुखी रुद्राक्ष धारण करना लाभकारी रहेगा।
5.शिव आराधना श्रेष्ठ उपाय है।

जातक की वर्तमान में सूर्य की महादशा चल रही है। सूर्य सप्तम भाव से संबंध बना रहा है परंतु सूर्य वृद्धा अवस्था का होने के कारण जातक के विवाह में बाधा उत्पन्न हो रही है। सूर्य में गुरु का अंतर होने से गुरु की दृष्टि सप्तम भाव में है परंतु गुरु बाल अवस्था का होने के कारण जातक के विवाह में रुकावट संभव है।

सूर्य में गुरु अंतर और राहु का प्रत्यंतर चल रहा है। राहु सप्तम भाव में स्थित होने से जातक को विवाह में रुकावट संभव है।

गोचरचक्र

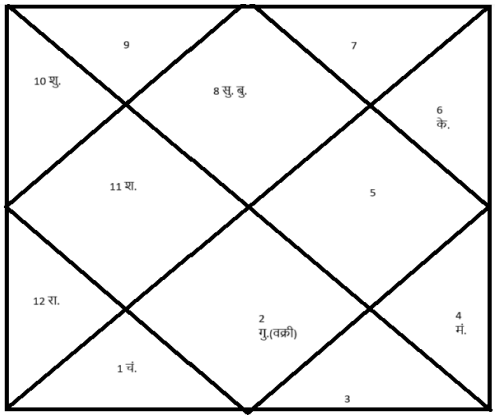

गोचर के आकलन से जातक के सप्तम भाव में गुरु वक्री होकर चल रहे हैं। जैसे ही गुरु मार्गी होंगे तब वृष राशि का गुरु जातक का विवाह कराएगा। जातक को शनि की अढैया भी चल रही है जब शनि मीन राशि में प्रवेश करेंगे तब जातक का विवाह होने के प्रबल योग है।

जन्म कुंडली को देखकर यह बताया जा सकता है की जन्म कुंडली में विवाह बाधक ग्रह कौन से हैं और उनका निदान क्या रहेगा। उनका उपाय करने से जातक को आ रही विवाह में रुकावट दूर हो जाएगी और जातक प्रेम पूर्वक विवाह का आनंद उठा पाएगा।

निष्कर्ष- जन्म कुंडली के अनुसार जातक के सप्तम भाव और सप्तमेश तथा सप्तम भाव पर पड़ने वाली दृष्टि संबंध का अध्ययन करके यह बताया जा सकता है कि जातक का विवाह होगा या विवाह में बाधा उत्पन्न होगी। विवाह के कारक ग्रह गुरु चंद्र शुक्र का विशेष अध्ययन किया जाता है क्योंकि यह शुभ ग्रह होते हैं। महादशा अंतर्दशा प्रत्यंतर दशा का विश्लेषण कर पता लगाया जा सकता है कि जातक का विवाह कब होगा या बधा कब तक रहेगी। गोचरिय स्थिति का अच्छे से निरीक्षण करके यह बताया जा सकता है कि कौन सा ग्रह लग्न या चंद्र कुंडली से विलंब कर रहा है। साथ ही यह जो ग्रह बाधक हो रहे हैं उनकी शांति करवाकर विवाह में आ रही बाधा दूर की जा सकती है और विवाह कारक ग्रह है वह यदि कमजोर हो तो उनके बलप्रद मंत्र जाप या रत्न धारण करके विवाह में आ रही रूकावटों को दूर किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 भ्रगु संहिता- पंडित राधा कृष्ण श्रीमाली, डायमंड पॉकेट x30 ओखला इंडस्ट्रियल नई दिल्ली संस्करण 2019

2 जातक पारिजात-गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसी दास दिल्ली संस्करण1981

3 सरावली-डॉक्टर मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी संस्कृत संस्करण 1977, 1981

4 भारतीय ज्योतिष-पंडित राजेश दीक्षित, प्रकाशक भाषा रन भवन हॉल हालनगंज कच्ची सड़क मथुरा संस्करण 1918